चूड़ी बनाने वालों के लिए आधुनिक भट्टियां बनाई

■ लुपिन फाउण्डेशन ने कराया निर्माण

भरतपुर, (निसं)। भरतपुर के ऊंच गांव में कांच की हरे रंग की चूड़ियां बनाने वाले लोग अब कम लागत में अधिक उत्पादन ले सकेंगे। साथ ही उनका स्वास्थ्य स्तर भी ऊंचा बना रहेगा जिसके लिये परम्परागत भट्टियों के स्थान पर लुपिन फाउण्डेशन ने नई दिल्ली के रूटैग (रूरल टेक्नोलॉजी एक्शन ग्रुप) के सहयोग से अति आधुनिक भट्टियों का निर्माण कराया है। इनमें सुरक्षित वातावरण में कम ईंधन से अधिक चूडियां तैयार की जा रही हैं।

लुपिन फाउण्डेशन के अधिशाषी निदेशक सीताराम गुप्ता ने बताया कि ऊंच गांव में कचेरा जाति के करीब 40 परिवार वर्षों से परम्परागत भट्टियों पर चूडियां बनाते आ रहे थे। इन भट्टियों में ईंधन की अधिक खपत होने के साथ ही इनसे निकलने वाला धुंआं उनके स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव डालता था साथ ही कांच की जहरीली गैस भी अनेक बीमारियां पैदा कर भट्टियों पर काम करने वाले व्यक्ति की उम्र को घटाकर 40 से 45 वर्ष कर देती।

इस समस्या के निदान के लिये संस्था ने सर्वप्रथम राज्य के विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी विभाग के सहयोग से नवीन चूडी भट्टियों का निर्माण कराया जिसमें धुआं निकालने के लिये 18 फुट ऊंची चिमनी लगाने के अलावा भट्टियों में फायरब्रिक्स लगाई गयीं लेकिन इसके बाद भी धुआं निकलना पूरी तरह बन्द नहीं हुआ और भट्टियों पर काम करने वाले व्यक्ति को बैठने में परेशानी भी होने लगी। इन सारी समस्याओं के निदान के लिये संस्था ने आईआईटी नई दिल्ली के रूटैग से सम्पर्क किया जिसके वैज्ञानिकों ने गांव में पहुंचकर समस्यायें जानीं और समाधान के लिये अतिआधुनिक भट्टी का निर्माण कराया। गुप्ता ने बताया कि इस आधुनिक भट्टी में न तो धुआं निकलता है और न ही कांच की जहरीली गैसें बाहर आती है।

जिससे भट्टी पर काम करने वाले आदमी के शरीर पर कोई दुष्प्रभाव नहीं पडता। इस भट्टी में फायरब्रिक्स इस तरह लगाई गयी है कि भट्टी का तापमान 1400 डिग्री सेन्टीग्रेड पहुंचने के बाद भी काम करने वाले व्यक्ति के शरीर को प्रभावित नहीं करता है। इसके अलावा इस भट्टी में परम्परागत भट्टियों के मुकाबले लगभग 50 प्रतिशत ईंधन की भी बचत होती है साथ ही भट्टी पर काम करनेवाला व्यक्ति आसानी से बैठ सकता है जिससे उसे कोई थकावट नहीं होती। इस नवीन भट्टी से कांच की चूडी बनाने वाले लोगों का उत्पादन भी करीब दोगुना हो गया है।

ऊंच गांव में कांच की चूडी बनाने वाला कारीगर प्रतिमाह आसानी से करीब 6 हजार रूपये कमा लेता है। इन हरे कांच की चूडियों का उपयोग ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष रूप से शादी विवाहों में किया जाता है और इसके विक्रेता गांव से ही चूडी खरीद ले जाते हैं। प्रतिवर्ष करीब 2 करोड़ रूपये की हरे कांच की चूडियों का व्यापार इस गांव से होता है। हरे कांच की चूडियों के विक्रय के कार्य में गांव के ही करीब एक दर्जन लोगों को रोजगार मिला हुआ है। वे गांव गांव जाकर इन चूडियों का विक्रय करते है जबकि कुछ व्यापारी इन्हें थोक में खरीद ले जाते हैं।

राष्ट्रदूत Tue, 05 December 2017
epaper.rashtradoot.com//c/24248686